प्रेस विज्ञप्ति

गोविन्द बल्लभ पंत कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय
पंतनगर, जिला– ऊधमसिंह नगर (उत्तराखण्ड)

प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा जागरूकता अभियान आयोजित

पन्तनगर। 21 फरवरी 2024। विश्वविद्यालय के मत्स्य विज्ञान महाविद्यालय में मत्स्य विभाग उत्तराखण्ड के सहयोग से राष्ट्रीय मात्स्की विकास परिषद, हैदराबाद द्वारा वित्त पोषित प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा जागरूकता अभियान का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डा. पी.के. पाण्डेय निदेशक, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद–शीत जल मात्स्यिकी अनुसंधान निदेशालय, भीमताल, विशिष्ट अतिथि डा. अरूण कुमार रावत पूर्व सलाहकार जैव प्रौद्योगिकी विभाग, नई दिल्ली, विश्वविद्यालय के कुलपति डा. मनमोहन सिंह चौहान एवं अधिष्ठात्री मत्स्य विज्ञान महाविद्यालय डा. मालविका दास उपस्थित रहें। कार्यक्रम में अतिथियों को शाल एवं स्मृति चिन्ह से सम्मानित किया गया।

कार्यक्रम में अपने संबोधन में मुख्य अतिथि डा. पी.के. पाण्डेय ने कहा कि मछलियों में ओमेगा–3 पोषक तत्व अधिक मात्रा में पाया जाता है जो स्वास्थ्य के लिए लाभदायक होता है। विश्व में मत्स्य पालन 40 से 42 गुना बढ़ा है। पिछले 10 वर्षों में मत्स्य उत्पादन में लगातार 8 से 9 प्रतिशत की बढ़ोत्तरी हुई है। विश्व में मछली खाने वालों की संख्या में लगातार बढोत्तरी हो रही है जिससे बाजार में इसकी मांग भी बढ रही है, जिससे किसान अपनी आय में लगातार वृद्धि कर रहे है।

कुलपति डा. मनमोहन सिंह चौहान ने कहा कि मत्स्य पालन में महिलाओं एवं युवा किसानों का रूझान बढ़ा है। उन्होंने बताया कि विश्वविद्यालय के मत्स्य विज्ञान महाविद्यालय द्वारा किसानों को मत्स्य बीज उपलब्ध कराया जा रहा है और हर वर्ष 5 लाख से अधिक मत्स्य बीज किसानों को वितरित किया जा रहा है और साथ ही साथ वैज्ञानिकों द्वारा तकनीकों को भी प्रशिक्षण के माध्यम से किसानों के मध्य पहुंचाया जा रहा है। उन्होंने कहा कि किसी भी कार्य की शुरूआत से पहले उसकी सम्पूर्ण जानकारी का होना आवश्यक होना चाहिए। इस अवसर पर डा. अरूण कुमार रावत ने बताया कि भारत के प्रधानमंत्री द्वारा 2025 तक किसानों की आय में दोगुना करने हेतु किसानोपयोगी कई योजनाएं चलायी गयी है। मत्स्य विकास हेतु पीएमएमएसवाई परियोजना प्रारम्भ की गयी है जिसकी अवधि 2020 से 2025 तक है। इस परियोजना के अंतर्गत मत्स्य किसानों को सब्सिडी भी प्रदान की जाएगी। उन्होंने बताया कि इस परियोजनाओं से किसान लाभ प्राप्त अपनी आय में वृद्वि कर सकते है। कार्यक्रम के प्रारम्भ में डा. मालविका दास ने कार्यक्रम की रूप–रेखा बताते हुए मत्स्य पालन के इतिहास पर प्रकाश डाला। राष्ट्रीय मात्सिकी विकास परिषद, हैदराबाद के मुख्य कार्यकारी अधिकारी डा. एल.एन. मूर्ति द्वारा ऑनलाइन माध्यम से कार्यक्रम में प्रतिभाग कर अपने विचार प्रकट किया। इस अवसर पर मत्स्य पालक श्री ओमपाल कश्यप ने अपने अनुभवों को साक्षा किया।

इस कार्यक्रम में राष्ट्रीय स्तर पर विकसित तकनीकों को विभिन्न माध्यमों से किसानों तक पहुंचाया गया। कार्यक्रम में कई संस्थानों से आये हुए वैज्ञानिकों डा. नित्यानन्द पाण्डेय प्रधान वैज्ञानिक, भीमताल; डा. प्रेम कुमार प्रधान वैज्ञानिक, नई दिल्ली; डा. वी.के. सिंह कृषि विज्ञान केन्द्र, ज्यौलिकोट; डा. एस कुमार शर्मा कृषि विज्ञान केन्द्र, काशीपुर; डा. ए.के. उपाध्याय पूर्व अधिष्ठाता मत्स्य विज्ञान महाविद्यालय; श्री प्रमोद कुमार उप निदेशक, मत्स्य विभाग, देहरादून; श्री अनिल कुमार उप निदेशक मत्स्य विभाग, उत्तराखण्ड; श्री संजय छिमवाल सहायक निदेशक मत्स्य, ऊधमसिंह नगर तथा कई सफल मत्स्य पालकों ने अपने विचार व्यक्त किये। कार्यक्रम विश्वविद्यालय के कुलसचिव, अधिष्ठाता, निदेशकगण एवं संकाय सदस्य उपस्थित थे। इस कार्यक्रम में उत्तराखण्ड के विभिन्न जिलों लगभग 550 मत्स्य पालकों ने प्रतिभाग किया। इस कार्यक्रम में एक प्रदर्शनी भी लगायी गयी, जिसमें 20 संस्थानों ने अपनी विकसित तकनीकों का प्रदर्शन किया। इस कार्यक्रम को मत्स्य विज्ञान महाविद्यालय की अधिष्ठात्री डा. मालविका दास की अगुवाई में संकाय सदस्यों डा. विपुल गुप्ता, डा. आशुतोष मिश्रा, डा. अनूप कुमार, डा. राजेश, डा. आकांक्षा, डा. अवधेश कुमार इत्यादि ने विशेष रूप से आयोजन करने में सहयोग प्रदान किया।

प्रदर्शनी का अवलोकन कर जानकारी लेते कुलपति डा. मनमोहन सिंह चौहान एवं अन्य।

कार्यक्रम में संबोधित करते मुख्य अतिथि डा. पी.के. पाण्डेय।